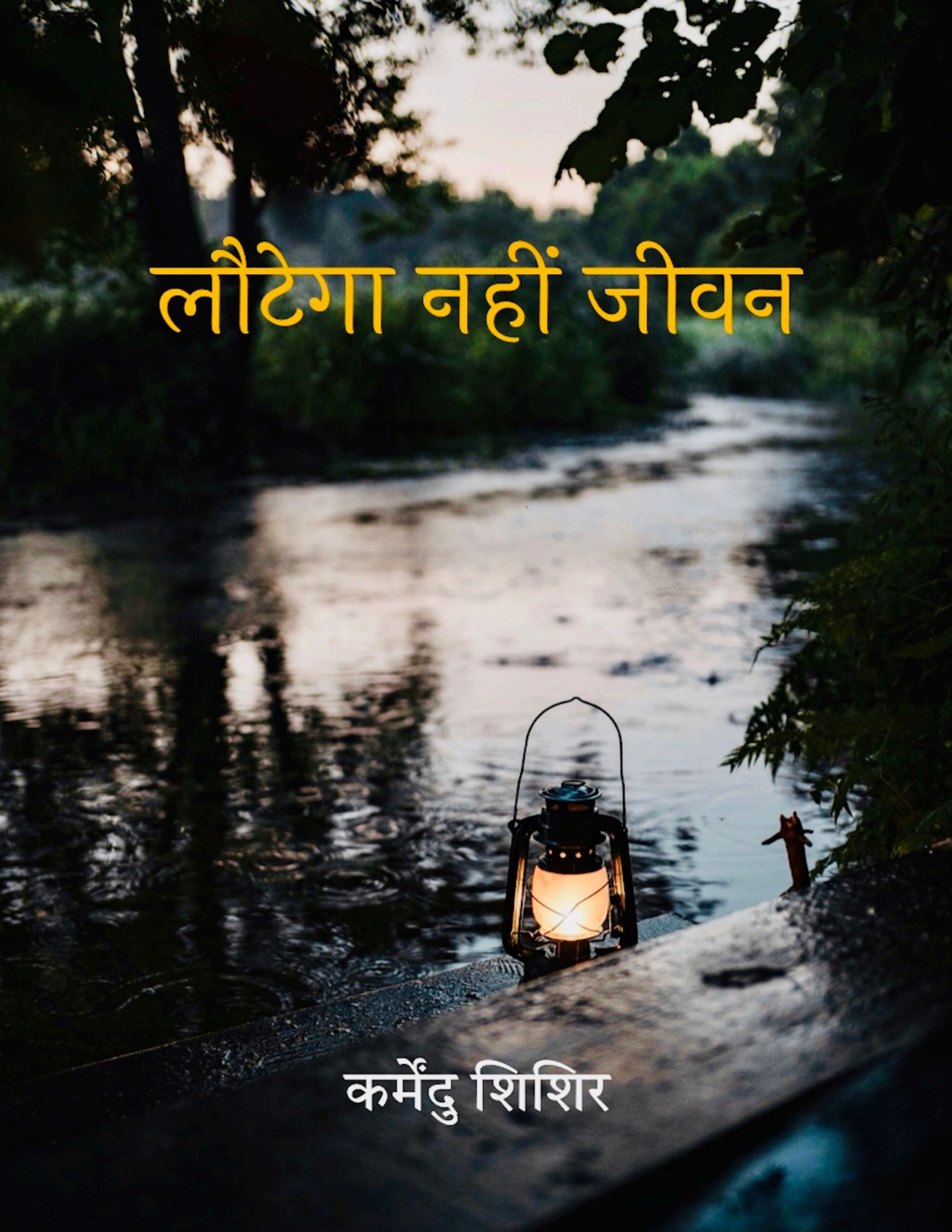

लौटेगा नहीं जीवन

कर्मेंदु शिशिर

लौटेगा नहीं जीवन

कर्मेंदु शिशिर

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2024

© कर्मेंदु शिशिर

आनंदमूर्ति चाचा की

पुण्य-स्मृति को

सादर

सच्चा सौंदर्य वास्तविकता का सौंदर्य है। कला किसी भी ऐसी चीज़ की रचना नहीं कर सकती जो वास्तविक जगत के सौंदर्य से होड़ ले सके।

-निकोलाई चेर्निशेवस्की

अनुक्रम

फिदुरिया	6
अकाल	17
गिलहरी	35
चेंगड़ा	46
सगुन	58
नींद	70
हाथ	79
फर्क	95
महामहिम	107
द्वंद्व	121
रक्तदाता	141
धुंध	153
शोक	163
आखिरी मुलाक़ात	172

आख़िरी फ़ैसला	187
करवट	201
युद्ध	209
आख़िरी वक्त	219
प्रतीति	227
कोचान गाथा	235
दुबाइन गाथा	242
मुंशी देवान गाथा	250
तिलका भगत	257
गोरका ब्रह्म	266
रूदन	286
लाखो	295
महथिन दाई	311
ऐसे थे मँड़ई दुबे	320
बाँझ को चाहिए चुल्लू भर जल!	328

फिदुरिया

जेठ की उमस भरी रात थी। नन्हकू फिर भी बरामदे में ही लेटा रहा। रात धीरे-धीरे चढ़ रही थी। ढीबरी की रोशनी को मानों अँधेरा भरपूर निगल गया था। अब एक छीजती मामूली रोशनी पसरी हुई थी। नन्हकू ने धीरे-धीरे करवट बदली।

...आखिर फिदुरिया चली ही गई। वह देखने भी नहीं जा सका था। बहुत दिनों से इधर दिखाई भी नहीं दे रही थी। उसे तो बाद में पता लगा कि वह बीमार है और बचने की कोई उम्मीद ही नहीं। हाथ-पाँव सूज गये थे। पेट फूल गया था। खून अंत तक बंद ही नहीं हुआ। चेहरा एकदम झाँवर हो गया था। ठीक से पहचान में भी नहीं आती थी।...

ढीबरी बुझ गई थी और बरामदे में चारों ओर अंधकार छा गया था। नन्हकू ने बेचैनी से दूसरी ओर करवट बदल ली।

...आखिर फिदुरिया नहीं ही बची! बलेसरा कह रहा था-सुबह तक उससे बात की, दोपहर को लगभग बेहोश हुई होगी और शाम को जब मुसफिरा खेत से लौटा तो देखा-कि वह मरी पड़ी है।...

नन्हकू ने फिर करवट बदली। बीड़ी निकाली। हथेली पर ठोका और मुँह से फूँककर, दाँतों तले दबा ली। काठी माचिस से लगते ही जल गई, बीड़ी सुलगाकर

उसने बेचैनी से लगातार दो-तीन कश टाने।

...जब से वह मुसफिरा के पास गई, एक दिन भी चैन से नहीं रही। इधर तो बहुत दिनों से बीमार ही चल रही थी। जाने किस मनहूस खूँटे से बँध गई बेचारी! अपना भाग कोसते मरी। पूरे जीवन में कितना कुछ सहती रही। मुसफिरा तो उसे जल्लाद की तरह पीटता था-हरामी, साला! और वह थी कि चुपचाप सहती रही। बेचारी दिन-रात मर-खपकर उसके खाने का जुगाड़ करती और यह चुपचाप चादर ताने पड़ा रहता। फिर भी, साले को तनिक हरख-बिसमाद नहीं।

नन्हकू फिदुरिया की मदद करना तो चाहता था, लेकिन उसने तो उससे बात तक करनी बंद कर दी थी। हमेशा कन्नी काटे रहती। इस बार भी ठीक से इलाज हुआ होता, तो जरूर बच जाती यह। नन्हकू ने कंपाउंडर बाबू को अकेले में कहा भी था। बड़ी मिन्नत की थी हाथ-पाँव भी जोड़े थे। चुपके से उनके घर दही भी पहुँचाया था। रात को जाकर मिला भी कि खरच उससे ले लें, और बड़े डागडर को दिखा दें। फिदूरिया किसी तरह भली-चंगी हो जाये। वह करज काढ़ कर भी सारा खरच देगा। लेकिन, फिदुरिया ने उसकी एक न सुनी। उसे पता चल गया था-कंपाउंडर बाबू का दरवाजा तक नहीं छूने दिया। मुसाफिरा की क्या? साला, दिन-रात गाँजे का दम चढ़ाये, अनाप-सनाप बकता फिरता रहा।... मरे तो बवाल छूटे। बाँझ गाय और बाँझ औरत को देखे से घर आयी लछिमी भी चली जाती है… रोज पीटता।